ये अद्भुत जीव दूसरी दुनिया के

□ शशिधर खां

सुनने में आया है कि अंतरिक्ष के किसी अज्ञात ग्रह के नौ प्राणियों पर सोवियत संघ के वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं। पिछले वर्ष जुलाई में एक दुर्घटनाग्रस्त अंतरिक्ष यान से शोधकर्ताओं ने इन प्राणियों को निकाला, तभी से इस सम्बन्ध में अनुसंधान जारी है। उनमें से एक प्राणी ने पिछले दिनों एक विचित्र शिशु को जन्म दिया जो चार घंटे के बाद मर गया। यह देखकर सारे वैज्ञानिक सकते में आ गए और तब यह बात छिप नहीं सकी। जिनीवा से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार मास्को से चोरी छिपे युगोस्लाविया लाए गए कागजातों से पता चला है कि सोवियत अनुसंधानकर्ताओं ने साइबेरिया के मीडा बंदरगाह नगर में एक दुर्घटनाग्रस्त अंतरिक्ष यान से दूसरी दुनिया के इन नौ प्राणियों को छुड़ाया। मास्को में इन पर गुप्त शोध चल रहा है।

युगोस्लाविया के सूत्रों ने उस बच्चे के जन्म की जानकारी दी है। यह बात अविश्वसनीय प्रतीत होती है मगर हो सकता है सच हो। सोवियत वैज्ञानिक इसलिए चकित हैं और निश्चित रूप से कुछ बता पाने में अपने को असमर्थ महसूस कर रहे हैं क्योंकि यह नवजात जीव देखने में बड़ा ही बेतुका और बेढंगा है।

युगोस्लाविया के एक जीव भौतिकशास्त्री मीलोटाड गुसावाक ने सर्वप्रथम यह



राज खोला और सोवियत वैज्ञानिक डॉ. सेपार कूरिलेव को पत्र लिखकर बताया कि यह विश्व शिशु देखने में युवा जैसा लगता है और वे नौ अंतरिक्ष जीव भी उसके जन्म से सकते में आ गए। उनके चेहरे पर विस्मय का भाव स्पष्ट देखा गया।

डॉ. कूरिलेव का कहना है कि जन्मने से लेकर मृत्युपर्यन्त वे अपनी आंखों से पूरी प्रक्रिया देखते रहे और जितनी देर में उस जीव के बारे में कुछ जानकारी हासिल की जाए, तब तक उसने दम तोड़ दिया। उन्होंने बताया कि किसी रेंगनेवाले जन्तु सरीखे दीखनेवाले उस शिशु की मृत्यु के बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता कि वह प्राकृतिक मौत मरा अथवा वैज्ञानिकों के प्रयोगविधियों की वजह से।

लॉस एंजील्स टाइम्स के अनुसार मीलोराड गुसावाक ने बताया कि जन्म के समय उस शिशु का वजन तीन पौंड सात औंस था। करीब १३ इंच लम्बा और फुटबॉल के आकार का उसका शव प्रयोगशाला में पड़ा है तथा वैज्ञानिक उस पर तरह-तरह के प्रयोग कर रहे हैं। यह देखने में अत्यन्त विकृत और कुरूप है। इसके तीन हाथ और तीन पैर हैं। तीन अंगों की बनावट भी विचित्र है और ऊपर से जोड़ा गया लगता है। पूरे बदन पर स्केलनुमा मोटी परत जमी हैं। माथा छिपकली जैसा है। छोटी-छोटी काली आंखें हैं, नाक का पता नहीं है, सिर्फ एक नासिका है और शरीर का रंग कुछ नीलापन लिए हैं।

प्राप्त ब्यौरे के अनुसार दूसरी दुनिया के प्रतीत होने वाले उन नौ युवा प्राणियों की बनावट कुछ-कुछ मनुष्य जैसी है। सिर्फ उनके मुंह नहीं है और उनका पूरा बदन किसी सूक्ष्मदर्शी मांस के रंग से मिलते-जुलते स्केलों से ढका है। उनके मुंह या नाक से कभी कोई आवाज नहीं निकलती, न ही ये पता चल पाया है कि अब वे दुखी हैं अथवा प्रसन्न हैं या क्या महसूस कर रहे हैं।

अपनी प्रयोगशाला में युक्त अत्याधुनिक उपकरणों की सहायता से दिन रात अध्ययन में लगे सोवियत और युगोस्लाव वैज्ञानिक अभी तक किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाए हैं कि कैसे यह विचित्र शिशु पैदा हुआ और कैसे चार घंटे के बाद ही मर गया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस शिशु की कोई चीज उन नौ प्राणियों से जरा भी मेल नहीं खाती। इससे वैज्ञानिकों का सिरदर्द और भी बढ़ गया है।

डॉ. मीलोटाड गुसावाक बताते हैं कि इस शिशु को देखकर यकायक विश्वास नहीं होता कि ऐसा भी कोई जीव हो सकता है। लगता है कोई डरावना सपना देख रहे हों। वे नौ प्राणी भी मानवीय नहीं लगते क्योंकि जन्म के समय उसकी मां के चेहरे पर विस्मय का भाव उभरा था लेकिन मरने के बाद अवसाद का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ा। अभी तक उन नौ प्राणियों के बारे में ही कुछ तय नहीं कर पाए थे कि यह नई बला आ गई।

लेकिन डॉ. सेपार कूरिवेव अपने शोध अभियान से निराश नहीं है। उन्हें पूरा यकीन है कि एक-न-एक दिन वे इस विचित्र रहस्य की असलियत का पता लगाकर रहेंगे। उन्होंने लॉस एंजील्स टाइम्स को बताया कि उस स्थान पर पुनः एक खोजी वैज्ञानिकों का दल भेजा गया है जहां अन्तरिक्ष यान में ये नौ प्राणी मिले थे। कहीं कुछ और बातों का पता चल जाए। उनकी नई चिंता इसी बात को लेकर है कि अगर यह नवजात शिशु उन्हीं नौ प्राणियों की पैदाइश है तो शक्ल सूरत में उनके बिल्कुल अलग-थलग क्यों हैं ?

'हिन्दुस्तान', एक अक्टूबर, 1969